Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

सेवा के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना

महेश कुमार गंगल ,रजनी त्यागी
असिस्टैन्ट प्रोफेसर , शिक्षा संकाय , वनस्थली विद्यापीठ , वनस्थली ,जिला – टोंक , राजस्थान
शोधकर्त्री , शिक्षा संकाय , वनस्थली विद्यापीठ , वनस्थली, जिला – टोंक , राजस्थान

सारांश : The present study was conducted with the objectives of studying the feelings of Security In -security of Parmanent & Temporary primary school teachers who working in kendriya vidyalaya, Government school, Private school and Vidyabharti school in Udaipur division of Rajasthan state. The sample of the study was consisted (312 parmanent & temporary 288) 600 teachers' from all types' school are selected using the Random sampling method for data collection. To examine the feeling of teacher's security In-security we used the self constructed and standardized Teachers' Security In-security Inventory. The data were analyzed through Mean, Standard deviation and T- test. As the result of the study , the feeling of security In-security is seen in the teachers as well as there is no significant difference is seen in dimensions of teachers security-insecurity such as- Job, school, community and teaching but the significant difference is seen in the context of school Management and Family related security-insecurity of Parmanent & Temporary primary school teachers .

प्रस्तावना :

कोठरी आयोग के अनुसार '' हमें पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक के व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षाणिक योग्यता, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा विद्यालय और समाज में उसका स्थान शैक्षणिक पुनर्रचना में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।'' अध्यापक शिक्षा अध्यापकों के लिए शिक्षा नियोजन है। अध्यापक शिक्षा न केवल सेवापूर्व कालीन भावी अध्यापकों में बल्कि सेवारत अध्यापकों में भी आत्मविश्वास एवं आत्म निर्भरता की भावना को विकसित करने में सहायक हो पाती है क्योंकि शिक्षण नियोजन से लेकर प्रस्तुतीकरण और मूल्यांकन तक प्रत्येक पहलू के बारे में व्यापक ज्ञान एवं अभ्यास ग्रहण कर पाना सम्भव हो पाता है। अध्यापक शिक्षा में विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है कि अग्रिम प्रजन्य को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं व्यावसायिक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में सक्षम हो सकें तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचारिकता के साथ साँस्कृतिक उद्दीपनों एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो सके। अध्यापक शिक्षा में नवाचारिक और शोधमूलक प्रवृत्तियों के विकास के साथ ही प्राचीन परम्परागत कठोरता और अपरिवर्तनशीलता सम्बन्धी विशेषताओं में परिवर्तन हो रहे हैं, फलतः अध्यापक शिक्षा समाजोपयोगी ही नहीं बल्कि एक युगोपयोगी कुशल अध्यापक को तैयार करने में सहायक होने के कारण महत्वपूर्ण बन चुकी है। अध्यापक शिक्षा मात्र एक कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके।

अध्यापक को शिक्षण प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया उसके इर्द गिर्द घूमती है। शिक्षा की उत्तम योजना तैयार कर लेने मात्र से शिक्षा में सुधार नहीं आ सकता अपितु उन कार्यकमों को सफलता के साथ क्रियान्वित करने पर है, इन कार्यकमों को कियान्वित करने की पूरी जिम्मेदारी अध्यापकों पर होती है। एक शिक्षक से इस दायित्व के निर्वहन अपेक्षा उसी स्थिति में करना उचित होगा जबकि उनको सेवा पद पर कार्य करने में स्थायित्व, स्वतन्त्रता तथा पर्याप्त वेतन आदि की स्थितियाँ उपलब्ध हों अथवा व्यवस्था की जाय।

डेकर एवं विल्मार (1995) यह शोध आस्ट्रेलिया की संस्था से कार्य मुक्ति के रूप में निकाले गये कर्मचारियों की सेवा–असुरक्षा की भावना पर आधारित है। जिसमें पाया कि संस्था से निकाले गये कर्मचारियों को सेवा असुरक्षा की भावना प्रभावित करती है तथा उनका मनोगत्यात्मक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। अतः उनमें सेवा असुरक्षा को लेकर दीर्घकालिक भय व्याप्त हो जाता है। डेवी, किनेकी एवं शॉकर (1998) ने क्षेत्रीय सन्दर्भ में दो भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की संस्थाओं के कर्मचारियों की सेवा असुरक्षा की भावना को जानने हेतु अध्ययन किया। जिसमें पाया गया कि जो संस्था काफी अनुभवी थी तथा जिसमें अनुभवी व्यक्ति कार्यरत थे, उसमें दूसरी संस्था जो कि अनुभव के क्षेत्र में अभी नयी है की अपेक्षा सेवा असुरक्षा की भावना कम पायी गयी और सेवा असुरक्षा की भावना कर्मचारी को संस्था में स्थायी होने में बाधा उत्पन्न करती है एवं कर्मचारी पूरी तरह समर्पित नहीं होता है किन्तु अनुभवी संस्था में इस समस्या से अपेक्षाकृत कम जूझना पड़ता है।

सुब्बा कृष्णा (1998) यह अध्ययन सेवा असुरक्षा की भावना से उत्पन्न तनाव पर आधारित है। तनाव कई तरह से हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी पर हावी होता है जो किसी न किसी प्रकार से हमारी मानसिक व शारिरिक शक्तियों को प्रभावित करता है। विभिन्न शोध अध्ययनों के आधार पर देखा गया है कि कुछ दशकों से व्यावसायिक दबाव भय को बढ़ावा दे रहा है। मध्यान्तराल में जॉब छूटने से उत्पन्न भय को सेवा असुरक्षा के नाम से जाना जाता है। यहाँ सेवा असुरक्षा और सेवा हीनता के विषय में भृमित नहीं होना चाहिए सेवा न होने की स्थिति में उत्पन्न तनाव सेवा असुरक्षा से भिन्न है। सेवा असुरक्षा अर्थात सेवा प्राप्त होते हुए भी उसका भय किन्तु सेवा न होना एक अलग प्रकार का भय/सेवा असुरक्षा एक प्रकार का जॉब छूटने का भय (डर) है।

किन्यूनेन, सैजा एवं हैप्पानेन (1999) ने अध्ययन द्वारा कर्मचारियों में व्याप्त कार्य असुरक्षा की भावना को जानने हेतु एक दीर्घकालिक अध्ययन किया। इसके लिए तीन भिन्न–भिन्न संस्थाओं के कर्मचारियों का चयन किया गया है–कागज कारखाना, सामाजिक और स्वास्थ्य सुरक्षा नगर पालिका विभाग। निष्कर्षतः प्राप्त हुआ कि कर्मचारी भी स्थायी सेवा होने पर वह निश्चिंत होता है किन्तु सेवा में किसी भी प्रकार का परिवर्तन उनमें असुरक्षा की भावना पैदा करती है और स्वयं को निम्न श्रेणी का मूल्यांकित करते हैं।

अमित भण्डारी (2006) इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न रोजगारों में कर्मचारियों की सेवा असुरक्षा का अध्ययन करना था। 1990 तक भारत में संगठित रोजगार ढाँचे में परिवर्तन होने लगा, स्थायी कर्मचारियों की जगह अस्थायी कर्मचारियों ने ले ली इस प्रक्रिया ने वेतन असमानता को बढ़ावा दिया। विभिन्न प्रकार के रोजगारों में सेवा असुरक्षा को भी बढ़ावा मिला। इस अध्ययन में स्थायी व अस्थायी कर्मचारियों के वेतन असमानता का अध्ययन किया गया। स्पष्टतः अस्थायी कर्मचारी स्थायी कर्मचारियों की अपेक्षा कम कमाते है। अध्ययन में आँकडों के लिए तात्कालिक संगठित निर्माणकारी उद्योगों का अध्ययन व्यक्तिगत स्तर पर किया गया। इसमें अस्थायी कर्मचारी को वेतन कम मिलने के साथ–साथ श्रम उत्पादन में भी भिन्नता पायी गयी। सेवा असुरक्षा के घटक शिक्षा एव कौशलों की विशेषताओं में बँट गये। सामान्य अपेक्षाओं के प्रतिकूल इस अध्ययन का परिणाम पाया कि स्थायी कर्मचारी अस्थायी कर्मचारियों की अपेक्षा सेवा असुरक्षा के प्रति अधिक जागरूक होते है। गंगल एवं त्यागी (2012) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया है कि शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में समग्र रुप से सार्थक अन्तर देखने को मिला। जबकि शिक्षक सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के सेवा, विद्यालय, समुदाय एवं शिक्षण आयाम के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नही पाया लेकिन शिक्षक सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के प्रबन्धन एवं परिवार आयाम में सार्थक अन्तर पाया गया।

महेश कुमार गंगल ,रजनी त्यागी ,"सेवा के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना"
Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-10 (Nov 2013): Online & Print

अतः कहा जा सकता कि भारतीय व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत कर्मचारियों तथा विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों में भी सुरक्षा–असुरक्षा की भावना विद्यमान है जिसके कारण विभिन्न विद्यालयों में भिन्न–भिन्न हो सकते है लेकिन उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में हम इससे इनकार नही कर सकते हैं। इस दिशा में हुये शोध कार्यों का विश्लेषण करने पर कहना होगा कि विदेशों में इस क्षेत्र शोध कार्य हुये है परन्तु भारत में शोध कार्यों का अभाव होने के कारण शोध किये जाने की आवश्यकता महसूस की है। उक्त वर्णित स्थिति से प्रेरित हो शोधकर्ताओं के मस्तिष्क में प्रश्न रुपी विचार जाग्रत हुआ कि क्या स्थायी एवं अस्थायी सेवारत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में भिन्नता है?प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा उक्त प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। इसलिये ही शोधकर्ताओं ने उक्त विषय को अध्ययन का केन्द्र बनाया गया है।

1.2 समस्या कथन : प्रस्तुत शोधपत्र के शीर्षक को निम्नलिखित स्वरुप प्रदान किया है– '' सेवा के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना ''

1.3 उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

1.प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

2.प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का आयामावार अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनायें : प्रस्तुत शोध के लिए निम्न शोध परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया है –

1.प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर है।

2.प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के विभिन्न आयामों में सार्थक अन्तर है।

1.5 शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक होने के कारण शोध हेतु शौक्षिक शोध की सर्वेक्षण विधि ैनतअमल डमजीवकद्ध का उपयोग किया है।

1.6 जनसंख्या एवं न्यादर्श : प्रस्तुत शोध में राजस्थान के उदयपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त शिक्षक इस अध्ययन की जनसंख्या हैं। शोध अध्ययन की जनसंख्या में से न्यादर्श चयन की यादृच्छिक न्यादर्शन विधि ;ंदकवउ ैउचसपदह डमजीवकद्ध द्वारा कुल 600 (312 स्थायी तथा 288 अस्थायी) शिक्षकों के न्यादर्श का चयन किया है।

1.7 प्रदत्तों का संकलन : प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक सुरक्षा–असुरक्षा अनुसूची के माध्यम से शोध अध्ययन हेतु प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से आवश्यक आँकडों का एकत्रीकरण किया गया है।

1.8 साँख्यिकीय प्रविधियाँ : प्रस्तुत अध्ययन में शोध हेतु आवश्यक एकत्रित आँकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण साँख्यिकीय प्रविधियाँ यथा– मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

1.9 शोध आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या : शोध अध्ययन के प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या अग्रांकित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है –

तालिका संख्या – 01
सेवा के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना

क. सं.	सेवा	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मान
1	स्थायी	312	144.69	14.52	3.79	3.11
2	अस्थायी	288	145.23	15.42		

स्वतंत्रता के अंश 598 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

तालिका संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के मध्यमान का मान क्रमशः 144.69 तथा 145.23 है, मानक विचलन का मान क्रमशः 14.52 तथा 15.42 है जिनकी मानक त्रुटि का मान 3.79 है एवं टी परीक्षण का मान 3.11 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान से अधिक है। इसलिए शोध परिकल्पना 'प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर हैं' को स्वीकार किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना 'प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर नहीं है' को अस्वीकार किया जाता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या–02
सेवा के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना

क. सं.	आयाम	सेवा	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि.	टी मान
1	सेवा	स्थायी	312	18.23	2.45	0.88	0.92
		अस्थायी	288	17.60	1.84		
2	विद्यालय	स्थायी	312	19.71	3.10	0.78	1.86
		अस्थायी	288	21.21	2.75		
3	समुदाय	स्थायी	312	26.38	3.39	0.82	0.76
		अस्थायी	288	26.10	3.48		
4	शिक्षण	स्थायी	312	17.17	2.58	0.88	0.49
		अस्थायी	288	17.42	2.32		
5	प्रबन्धन	स्थायी	312	16.04	2.42	1.37	2.03
		अस्थायी	288	16.04	2.33		
6	परिवार	स्थायी	312	12.60	1.69	1.56	2.41
		अस्थायी	288	12.60	2.27		

स्वतंत्रता के अंश 598 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

तालिका संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के विभिन्न आयामों (सेवा, विद्यालय, समुदाय तथा शिक्षण) के टी परीक्षण के अवकलित मान 0.92, 1.86, 0.76 तथा 0.49 प्राप्त हुए है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान से कम है। इसलिए शोध परिकल्पना 02 प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के विभिन्न आयाम (सेवा, विद्यालय, समुदाय तथा शिक्षण) में सार्थक अन्तर हैं' को अस्वीकार किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के विभिन्न आयाम (सेवा, विद्यालय, समुदाय तथा शिक्षण) में सार्थक अन्तर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

तालिका के अवलोकन से यह भी ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की प्रबन्धन तथा परिवार सम्बन्धी सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के टी परीक्षण के अवकलित मान क्रमशः 2.03 तथा 2. 41 प्राप्त हुये है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान से अधिक है। इसलिए शोध परिकल्पना 'प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की प्रबन्धन तथा परिवार सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर है', को स्वीकार किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना 'प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की प्रबन्धन तथा परिवार सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर नहीं है', को अस्वीकार किया जाता है। परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के आयाम प्रबन्धन तथा परिवार में सार्थक अन्तर है।

1.10 निष्कर्ष, विवेचना एवं सुझाव : प्रथम शोध परिकल्पना के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर पाया गया हैं। अर्थात परिकल्पना स्वीकृत हुई है जिसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि प्राथमिक

विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों में अपने कार्य क्षेत्र तथा उससे जुड़े पहलुओं पर उनमें असुरक्षा की भावना व्याप्त है। अस्थायी शिक्षक स्थायी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक असुरक्षित महसूस करते हैं। गंगल एवं त्यागी (2012) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया है कि शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में समग्र रुप से सार्थक अन्तर देखने को मिला। अमित भण्डारी (2006) ने पाया कि स्थायी कर्मचारी अस्थायी कर्मचारियों की अपेक्षा सेवा असुरक्षा के प्रति अधिक जागरूक होते है।

द्वितीय शोध परिकल्पना के सन्दर्भ में पाया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के आयाम (सेवा, विद्यालय, समुदाय तथा शिक्षण) में सार्थक अन्तर नहीं हैं। जबकि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों में प्रबन्धन तथा परिवार को लेकर सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में अन्तर पाया गया है। इसका सम्भावित कारण यह हो सकते है कि इन शिक्षकों को प्रबन्धन की ओर से सहयोग, सम्मान, कार्य करने की स्वतन्त्रता तथा पद पर कार्य करने के लिए स्पष्ट व निष्पक्ष सेवा शर्तों के प्रावधानों का अभाव हो। साथ ही इनमें परिवार से दूर जाने का भय,उनको पर्याप्त समय न दे पाने के कारण परिवार का अलगाव तथा पर्याप्त धन की व्यवस्था न होने से परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी न कर पाने से परिवार का असहयोग मिलना आदि। गंगल एवं त्यागी (2012) ने पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में समग्र रुप से सार्थक अन्तर देखने को मिला। जबकि शिक्षक सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के आयाम सेवा, विद्यालय, समुदाय एवं शिक्षा के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नही पाया गया किन्तु शिक्षक सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के प्रबन्धन एवं परिवार आयाम में सार्थक अन्तर पाया गया।

पूर्व में हुये शोध अध्ययन शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त परिणामों की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं। शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर सुझाव विशेषकर निजी विद्यालय के लिये कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के स्थायी तथा अस्थायी सेवारत शिक्षकों में सुरक्षा–असुरक्षा तथा उसके आयाम प्रबन्धन तथा परिवार के प्रति सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पायी गयी है जिसे दूर करने के लिए पर्याप्त एवं उचित प्रशासनिक कदम उठाये जाने चाहिए। विद्यालय प्रबन्धन को शिक्षकों के लिए मानवता आधारित विस्तृत दृष्टिकोण और स्पष्ट व निष्पक्ष सेवा शर्तों का प्रावधान करना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक के स्वाभिमान एवं सम्मान की रक्षा की जानी चाहिए।

सरकार एवं प्रशासन के द्वारा शिक्षकों की सेवा एवं पर्याप्त वेतन की व्यवस्था हेतु उपलब्ध नियमों की कठोरता से अनुपालना करवायी जानी चाहिए जिससे वह अपने परिवारिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति सम्मान एंव स्वाभिमान के साथ अपने को सुरक्षित महसूस करते हुये कर सकें। तभी वह शिक्षण व्यवसाय में अपना पूर्ण योगदान स्वेच्छा से देने हेतु प्रेरित हो सकेंगे। जिससे शिक्षण व्यवस्था को और अधिक सुदृढ, सशक्त एवं देश के लिए कल्याणकारी बनाया जा सकता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष यद्यपि राजस्थान के उदयपुर मंडल के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर आधारित है। किन्तु व्यापकता की दृष्टि से यह उचित कदम होगा कि अन्य स्तरों के विद्यालय के शिक्षकों में तथा अन्य राज्यों के प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर इसी प्रकार के अध्ययन कर प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों की जाँच एवं संपुष्टि भी की जा सकती है।

सन्दर्भ :–

चढ्ढा, एन. के. एवं दिलीप (2001), ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन सम्बन्धी अध्ययन, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
चोपडा, रविकांत (1991),उभरते भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, एनसीईआरटी. पब्लिकेशन, दिल्ली।
फॉरशैला (2007), समयबद्ध सेवा से शिक्षकों में व्याप्त असुरक्षा की भावना, यूनिवर्सिटी ऑफ बर्जिंग, पृष्ठ. 683–690।
गुप्ता एस. पी., (2006), सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिसर्श एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
केबट, आर. एन. (2007), राष्ट्रीय चेतना का संदेशवाहक : शिक्षक, शिविरा, मासिक पत्रिका, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, बीकानेर, पृष्ठ. 17।
टी.डोरोथी,(1961), इशैन्सियल ऑफ प्रोफेशनल ग्रोथ, जर्नल ऑफ एज्यूकेशन लीडरशिप, वोल्यूम–44, पृष्ठ–4–10।
सिंह, अरुण कुमार, (2012), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, नई दिल्ली।

WEBSITES:-

www. psychological security. com
www. interscience. willey. com
www. news. 4 jox. com
www. bulletin of the world health. org. com
www. usnews. com
www.americanteachers/encyclopedia.com
www.indianeducationresearch.com
www. emurings at chez. news. com

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net